Vol. 12, No.1 (January 2023) pp. 137-147 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

ताल के दश प्राण" संगीत मकरंद के विशेष संदर्भ में

अक्षिता बाजपाई, शोध छात्रा
प्रो. गौरांग भावसार (शोध निर्देशक)
तबला विभाग, प्रदर्शन कला विभाग
महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
Email: bajpaiakshita2@gmail.com

शोध सार

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से शोधछात्रा द्वारा नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित ताल के दश प्राण से संबन्धित सम्पूर्ण जानकारी जो ग्रंथ में निर्दिष्ट है, वह तथ्यो के अनुसार प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया जा रहा है. प्राचीन काल से ही ताल के दश प्राण का प्रयोग विभिन्न-विभिन्न स्थानों में होता रहा है जिनका वर्णन वेद, पुराण, उपपुराण, महापुराणों, उपनिषदों इत्यादि में प्राप्त होता है, परंतु यह वर्णन ताल प्राण की संज्ञा के रूप में नहीं बल्कि अलग-अलग रूप में प्राप्त होता है. संगीत के आधार ग्रंथ नाट्यशास्त्र में भरतमुनि द्वारा इन दश प्राणों को प्राण के रूप में उल्लेख न करते हुए इन्हे ताल के घटक व ताल के आधार भूत तत्व के रूप में परिभाषित किया गया है. तथा इनका वर्णन अन्य संगीत ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है. परंतु ताल के दश प्राण काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का प्राण रूप में उल्लेख सर्वप्रथम पंडित नारद कृत संगीत मकरंद ग्रंथ में ही प्राप्त होता है. इसी तथ्य को प्रकाश में लाने के लिए संगीत मकरंद को आधार मानते हुए इस शोधपत्र में केवल नारद कृत संगीत मकरंद ग्रंथ के आधार पर ही ताल के दश प्राण से संबन्धित तथ्यों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है.

बीज शब्द- नारद, संगीत, मकरंद, ताल, प्राण, लय

जीवन का आधार प्राण है जो शरीर, मन और चेतना को सदैव गतिशील रखता है. अथर्ववेद के प्रथम मंत्र में प्राण की विशिष्ठता का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि-

प्राणाय नमो यस्य सर्वभिदं वशे
यो भूत: सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्व प्रतिष्ठितम् [1]

अर्थात् मैं उस प्राण को नमस्कार करता हूँ जिसके आधीन सम्पूर्ण जगत है, तथा जो समस्त प्राणियों का ईश्वर है और जिसमें सर्वस्य प्रतिष्ठित है. शरीर के आधार प्राण का विस्तृत रूप अथर्ववेद के मंत्रों में प्राप्त होता है. उपनिषदों में प्राण कि तुलना ब्रह्म देव से की गयी है. शरीर के कण कण में प्राण विद्यमान है, प्राण शक्ति प्रत्येक क्षण कार्यरत

1 कुमार, धर्मेन्द्र ,अथर्ववेद संहिता,(नई दिल्ली: दिल्ली संस्कृत अकादमी,2013-2014) ग्यारवा कांड, चतुर्थ सूक्त, श्लोक-1,283

रहती है भले ही शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ व कामिन्द्रियाँ विश्राम कर ले सम्पूर्ण ब्रह्मांड में प्राण सर्वाधिक शक्तिशाली जीवन तत्व है. प्रश्नोपनिषद के श्लोक में यह कहा गया है कि-

प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च

प्राणस्येदं वशे सर्व यत् त्रिदिवि प्रतिष्ठितम्

मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्री श्च प्रज्ञां च विधेहि न इति।[2]

अर्थात्- यह सम्पूर्ण जगत तथा स्वर्गलोक में जो कुछ स्थित है, वह सब प्राण के ही आधीन है. जिस प्रकार माता अपने पुत्र की रक्षा करती है उसी प्रकार हमारी रक्षा करें तथा हमें श्री (सौंदर्य) और बुद्धि (प्रज्ञा) प्रदान कीजिये.

भारतीय संगीत का मुख्य आधार ताल है जिसे संगीत का प्राण माना जाता है. जिस प्रकार शरीर का अस्तित्व प्राणों के बिना हो नहीं सकता उसी प्रकार संगीत का भी अस्तित्व ताल के बिना अकल्पनीय है. प्राचीन काल से ही प्राणों की संख्या दस बतायी गयी है जो वायु के रूप में इस प्रकार से है- प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकंल, देवदत्त एवं धनंजय. उपर्युक्त दस प्राणों में प्रथम पाँच मुख्य प्राण है व अंतिम पाँच को उप प्राण से संबोधित किया गया है (पाण्डेय, 2013:10) ताल के मुख्य तत्वों को प्राणों की संज्ञा सर्वप्रथम नारद कृत संगीत मकरंद ग्रंथ में दी गयी है. भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र में ताल के अनिवार्य तत्वों को घटकों के रूप में स्वीकार करते हुए उल्लेख किया गया है (शुक्ल,1978:109). भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में काल, मार्ग, क्रिया, काल अवयव (अंग), पाणि (ग्रह) तालभेद (जाति) कला और यति का उल्लेख प्राप्त होता है, परन्तु नाट्यशास्त्र में प्रस्तार का उल्लेख नहीं प्राप्त होता है.

कालमार्गक्रियाङ्गानिगृहजातिकलालयाः।

यतिप्रस्तारकंचैवतालप्राणादशस्मृताः ॥[3]

नारद कृत संगीत मकरंद के द्वितीय अध्याय नृत्यध्याय के तृतीय पाद में दश ताल प्रबंध, लघुसुलादि व अंग तालों के पश्चात ताल शब्द निष्पत्ति के अंतर्गत श्लोक संख्या 49 से 100 तक ताल के दस प्राण का वर्णन किया गया है. देवर्षि नारद का इस विषय में यह कहना है, कि ताल सांसारिक और आध्यात्मिक रूप से शिव और शक्ति दोनों का प्रतिनिधित्व करता है.

काल

उपर्युपरिविन्यस्यपद्मपत्रशतंसकृत् ।

स कालःसूचिसंभेदात्तत्क्षणस्यकलंप्रति ॥

लवःक्षणैरष्टभिःस्यात्काष्ठाचाष्टलवात्मिका ।

अष्टकाष्ठानिमें षःस्यानिमें षैरष्टभिःकला ॥

ताभ्यांचैवचतुर्भागचतुर्भानामनुद्रुतः।

अनुद्रुताभ्यांबिन्दुश्चबिन्दुभ्यांतुलघुर्भवेत् ॥

लघुद्वन्द्वंगुरुश्चैवत्रिलघुलुतमुच्यते।

2 प्रश्नोपनिषद, (गोरखपुर: गोविंदभवन कार्यालय गीता प्रेस),प्रश्न-2 ,श्लोक-13,34.

3 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),43, 51.

इतिमानगतिःप्रोक्तातालःपूर्वसूरिभिः॥ [4]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में काल का पहला व आवश्यक स्थान है, जिसे ताल रचना के लिए अनिवार्य तत्व माना जाता है, काल समय को इंगित करता है. ताल समय के उपायों या इकाइयों पर आधारित है, काल की सबसे छोटी इकाई 'क्षण' कहलाती है, यदि एक साथ एक समय में सौ कमल पुष्प की पत्तियों को एक के ऊपर एक रख कर सूई से भेदा जाये,तो भेदने में लगने वाला समय एक क्षण कहलाता है (जौहरी, 2019: 212).

8 क्षण= 1 लव	8 निमेष = 1 कला	2 बिन्दु= 1 लघु
8 लव= 1 काष्ठ	2 कला= 1 अनुद्रुत	2 लघु= 1 गुरु
8 काष्ठ=1 निमेष	2 अनुद्रुत= 1 बिन्दु	3 लघु= 1 प्लुत [5]

भरतमुनि काल के इस सारणी का पालन नहीं करते है जो सामान्य समय को दर्शाता है. उनके अनुसार, एक मात्रा पाँच छोटे अक्षरों के उच्चारण में लगने वाले समय के बराबर होती है. लघु एक मात्रा के बराबर है.

मार्ग

दक्षिणोवार्तिकश्चैवतथाचित्रविचित्रकः।

तथाचित्रतरस्तुस्यादतिचित्रतरो मतः॥[6]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में मार्ग का दूसरा स्थान है. काल के पश्चात, नारद द्वारा संगीत मकरंद में मार्ग के बारे में बताया गया है. 'मार्ग' का शाब्दिक अर्थ रास्ता, पथ, राह, विधि इत्यादि से है परन्तु ताल मे मार्ग का प्रयोग काल में समय इकाइयों की गिनती को नियंत्रित करने के लिए किया गया है. ताल मे मार्ग द्वारा ताल के एक आवर्तन की कुल लम्बाई ज्ञात होती है. पाँच लघु अक्षरों के उच्चारण में लगने वाले समय को ताल की एक मात्रा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है तथा यह मात्राएँ लयबद्ध-ताल चक्र की गति को नियंत्रित करती है. (Lakshmi,1996:250). आमतौर पर, मार्ग तीन प्रकार माने गए है, शारंगदेव द्वारा एक और मार्ग 'ध्रुव' को जोड़ा गया है[7] जिसका वर्णन संगीत मकरंद में नहीं प्राप्त होता है. सभी ग्रंथकारों द्वारा स्वीकृत तीन मुख्य मार्ग चित्र, वर्तिका और दक्षिण है. नारद द्वारा छह मार्गो का उल्लेख किया है. वे इस प्रकार है:

दक्षिण: इस मार्ग में एक कला में आठ मात्राएं है,और यह धीमा गति का है.

वार्तिक: इस मार्ग में एक कला में चार मात्राएँ है और यह मध्यम गति की है.

चित्र: इस मार्ग में एक कला में दो मात्राएं है और यह तेज गति की है.

नारद तीन और मार्ग जोड़ते है, प्रत्येक पिछले वाले की तुलना में दोगुनी गति का है.

षडवःकथितोमार्गस्तस्यरूपंनिरूप्यते।

एतदेवनारदस्यमतमिष्टंयथाक्रमम् ॥

---

4 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920), 43, 53-54

5 M. Vijay Lakshmi, A critical study of Sangita Makaranda of Narad (New Delhi: Gyan publishing house,1996),250.

6 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),44, 56

7. पाण्डेय, सुधांशु, ताल प्राण (लखनऊ: संस्कृति दर्पण,2013),37.

अष्टमात्राकलाज्ञेयामार्गेदक्षिणसंज्ञके।
वार्तिकस्यतुचतुर्मात्राकलाचित्राद्विमात्रिका ॥
द्रुताचित्रतरेतस्यालघुश्चित्रतरोमतः।
अतिचित्रतरोमार्गकलाश्चद्रुतसंज्ञिक: ॥[8]

चित्रतर: इसमें एक काल में एक ही मात्रा होती है.

अतिचित्रतर: इसमें एक मात्रा या एक द्रुत के आधे हिस्से का एक काल होता है.

अतिचित्रतम: केवल अनुद्रुत से युक्त ताल की सबसे तेज गति एक मात्रा का एक चौथाई.

ध्यान देने योग्य बात यह है, कि नारद द्वारा मार्गी शब्द का उल्लेख नहीं किया, जबकि वे पांच मार्गी तालों का वर्णन करते हुए उनके भौतिकीकरण विकास इत्यादि की चर्चा की है. वह मार्गी तालों में प्रयुक्त होने वाली मात्रा का वर्णन करते हुए तथा ताल की क्रियाओं को स्पष्ट करते हुए मार्गी शब्द का उपयोग किया गया है. मात्रा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है.

लध्याक्षराणां पञ्चानां मानमुच्चारणे हि यत्।
तत् परिमाणं परिशेयं मार्गस्तालैस्ततो बुधैः॥[9]

यह पद क्रिया के वर्णन से पहले आता है–जो ताल के दस प्राणों में से एक है. काल (समय) में नारद ने मात्रा के स्थान पर लघु का नाम लिया है, इसके अलावा, 'काल' सामान्य समय को घंटे और प्रहर आदि बनाने के लिए उपयोग किया जाता है, जो संगीत में ताल के सामान्य समय की माप पर लागू नहीं होते है.

क्रिया

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में क्रिया का तीसरा स्थान है इसका अर्थ है 'काम', काम करना, क्रिया और (व्याकरण में प्रयुक्त होने वाली क्रिया) लेकिन ताल में, क्रिया शब्द का प्रयोग ताल की समय इकाइयों को हाथों से रखने के लिए प्रयुक्त कार्यों के लिए किया जाता है. विशिष्ट समय इकाइयाँ- ज्यादातर मात्राएँ हाथों की मापी हुई चाल या ताली द्वारा दर्शायी जाती है. मार्गी और देशी ताल दोनों में आठ क्रिया है. क्रियाएँ दो प्रकार की है-निशब्द और सशब्द क्रिया.

तस्य हस्तनिपातस्तु शम्यतालस्तु वामतः।
हस्तयोरुभयोर्घातौ संनिपातद्रुतौ स्मृतौ ॥[10]

मार्गी ताल की सशब्द क्रियाएँ: नारद द्वारा संगीत मकरंद में ताल, शम्य, द्रुत, सन्निपात यह शब्द युक्त चार प्रकार की क्रियाओं का वर्णन किया गया है. यह सशब्द क्रियाएँ ध्वनियुक्त ताल है, और इन्हें पात कला के नाम से भी जाना जाता है.

सर्वाङ्गुलिसमाक्षेप आपाद इति कीर्तितः।
निष्क्रामोऽथ गतिस्तस्या अङ्गुलीनां प्रसारणम् ॥

8 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),44, 57-59
9 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),44, 60
10 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),44, 66

तस्य दक्षिणतः कालो विक्षेप इति कथ्यते।
विवर्णनं च हस्तस्य प्रवेशोऽधोमुखस्य च॥[11]

निशब्द क्रिया: आवाप, निष्क्राम, विक्षेप और प्रवेशक, इन्हें कला के रूप में जाना जाता है, जबकि सशब्द क्रिया हथेलियों, ताली, उंगलियों को थपथपाने आदि के साथ ध्वनि उत्पन्न करती है. निशब्द क्रिया जो ध्वनि उत्पन्न किये बगैर क्रियाएं की जाए जैसे- अंगुलियों से संबंधित हावभाव, हाथों की गति, उन्हें अंदर की ओर खींचना और फैलाना इत्यादि.

आवाप-दाहिने हाथ की हथेली को व्योम की ओर रखते हुए संकुचित करना आवाप क्रिया कहलाती है.

निष्क्राम-हाथ की हथेली को नीचे की तरफ रखते हुए उँगलियों का गति में रहना निष्क्राम क्रिया कहलाती है.

विक्षेप- खुले हुए हाथ से दक्षिण की ओर विस्तार करना विक्षेप क्रिया कहलाता है.

प्रवेश-बायीं ओर हाथ को लाते हुए उँगलियों को सिकोड़ना प्रवेश क्रिया कहलाती है.

देशीयोग्यं (ग्यान्) प्रवक्ष्यामि व्यापारान् ध्रुवकादिकान्।
ध्रुवका सर्पिणी कृष्या पद्मिनी च विसर्पिका ॥
विक्षिसाख्या पताकाख्या मातृका त्वरिताष्टमी।
अमात्राणि (पि)विज्ञेया कथितं नारदेन च॥[12]

देशी क्रियाएँ आठ प्रकार की होती है. ध्रुवका नाम की पहली क्रिया ध्वनि सहित सशब्द क्रिया है जबकि अन्य ध्वनि रहित है. जो इस प्रकार से है- सर्पिणी बायीं दिशा की ओर जाने वाली, कृष्णा दाहिनी दिशा में जाने वाली, पद्मिनी नीचे की दिशा में जाने वाली, विसर्जिका बाहर की दिशा में जाने वाली, विशिप्ता समिटी हुयी, पताका ऊपर की ओर जाने वाली और त्वरित (पतिता) हाथ को गिराने की दिशा में जाने वाली. ध्रुवका, पताका, सर्पिणी, चार मात्रा वाली कला वार्तिक मार्ग में प्रयुक्त होती है. ध्रुवका और पतिता का प्रयोग चित्र मार्ग में किया जाता है. इन देशी क्रियाओं को मात्रा कहा जाता है. जिसका वर्णन संगीत मकरंद में प्राप्त होता है.

अंग

अनुद्रुतो द्रुतश्चैव लघुर्मुरुस्ततःपरम् ।
प्लुतश्चेति क्रमें णैव तालाङ्गानि च पञ्चधा ॥
द्रुतस्य देवता शम्भुलंघोश्चाद्रिपतेःसुता।
गौरी च श्रीश्चापि गुरोःप्लुते ब्रह्मादयस्त्रयः ॥[13]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में अंग का चौथा स्थान है. नारद के अनुसार अनुद्रुत, द्रुत, लघु, गुरु और प्लुत पाँच तालांग है. अंग का अर्थ हिस्सा व शरीर के अंग इत्यादि से लिया है परंतु यहाँ अंग ताल से संबंधित है, क्योंकि ताल एक लयबद्ध चक्र बनाने वाले भागों के रूप में है. ताल या लयबद्ध संरचना विभिन्न समय इकाइयों द्वारा तैयार की जाती है, इन समय इकाइयों को अंग कहा जाता है. नारद द्वारा अनुद्रुत को छोड़कर इन सभी

11 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),45, 64-65.
12 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),45, 68-69.
13 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),45, 74-75.

अंगो के अधिकारी देवताओं का नाम लेते है. द्रुत के देवता शंभू है, लघु अद्रीपति की पुत्री है, जैसेकि पार्वती, गौरी और श्री दोनों ही गुरु के देवी-देवता है. त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर, प्लूत के देवता है.(सुधांशु 2014,67) अनुद्रुत ताल कि इकाइयों में सबसे छोटी इकाई है. यह एक मात्रा का केवल 1/4 भाग होता है, आधी मात्रा को द्रुत कहा जाता है, एक मात्रा में दो द्रुत होते है और चार अनुद्रुत, दो मात्रा और लघु एक गुरु बनाते है और तीन मात्राएँ एक प्लुत बनाती है. इन प्रत्येक पांचों इकाइयों के चार समानार्थक शब्द है .

अनुद्रुतमर्धचन्द्रं व्यञ्जनं चारु नासिकम् ॥
अव्यक्तं चेतिप श्वैते पर्यायाख्यमनुटुते।
अर्धमात्रद्रुतं व्योम वलयं बिन्दुके द्रुतम् ॥
लघु नियामकं हस्वमात्रतालरसं तथा।
द्विमात्रं च कला वक्रं दीर्घं च गुरु कीर्तनम् ॥
प्लुतत्रयं त्रिमात्रं च दीप्तं तालत्रयं तथा।
अनुद्रुतस्वरूपं च तद्भालेन्दुकलात्मकम् ॥
द्रुतस्तु वलयाकारो लघुरूवंशराकृतिः।
गुरुर्वक्रधनुर्जेयंप्लुतस्यशिखरोगुरुः ॥ पञ्चाङ्गानां स्वरूपादि कथितं नारदेन च। [14]

1. अणुद्रुत- अर्धचंद्र, व्यंजनम, चारु नासिकम, अव्यक्तम

2. द्रुत- अर्धमात्रम, व्योमम, वलयम, बिंदु

3. लघु- व्यापकम, ह्रश्वम, मात्रा, सरलम

4. गुरु- द्वि मात्रम, वक्रम, दीर्घम, कला

5. प्लुत- त्रयम्, त्रिमात्रम, दीपतम, समोद्भवम

अंगों को इन संकेतों और प्रतीकों द्वारा दर्शाए जाता है, जिसका विवरण संगीत मकरंद नृत्याध्याय के तृतीय पाद के अंत में प्राप्त होता है.

अनुद्रुत-	‿	¼ मात्रा
द्रुत	0	½ मात्रा
लघु	।	1 मात्रा
गुरु	ऽ	2 मात्रा
प्लूत	ऽ	3 मात्रा [15]

ग्रह

ग्रहास्त्रिधा समा नीतास्तथानागत इत्यपि।
तल्लक्षणं च वक्ष्यामि नारदो मुनिपुङ्गवः॥

14 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),47, 96-100.

15 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),45,74-75

निकातीते त्वतीतस्य तालातीते वनागतः।

समःसमग्रहःप्रोक्तस्तालज्ञैःपूर्वसूरिभिः॥[16]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में ग्रह का पाँचवाँ स्थान है. ग्रह शाब्दिक अर्थ है पकड़ना, ग्रहण करना' या शुरू करना. ताल में ग्रह गीत के अनुक्रम में ताल के शुरुआती बिंदु को इंगित करता है, आम तौर पर यह सर्वविदित है कि ताल या ताल की मात्रा (तबला पर) एक गीत के एक विशिष्ट पूर्व-निर्धारित बिंदु से शुरू होती है. ताल या तो गीत से शुरू होता है या गीत के शुरू होने से पहले या बाद में होता है. इन्हें ही ग्रह कहा जाता है, ग्रह के तीन प्रकार होते है.

सम ग्रह: जब गीत या गत ताल की प्रारम्भिक मात्रा से या सम बिन्दु से आरम्भ होते है, और गीत व गत से ताल का प्रारंभिक बिंदु में ल खाता है तो वह सम ग्रह कहलाता है.

अतीत ग्रह: अतीत का शाब्दिक अर्थ है बीता हुआ, सम के निकाल जाने के बाद ताल का आरंभ किया जाता है तो उसे अतीत ग्रह से आरम्भ कहा जाता है. अर्थात् जब किसी गीत का प्रारंभिक बिंदु समाप्त हो जाता है और कुछ विराम के बाद ताल का आरम्भ होता है तो उसे अतीत या नीता ग्रह कहा जाता है. जिसका उल्लेख नारद द्वारा संगीत मकरंद में प्राप्त होता है.

अनागत ग्रह: अनागत का अर्थ है आनेवाला या जो अभी नहीं पहुंचा हो, जब मुख्य सम आने से पहले ही गीत व गत का आरम्भ होता है तो उसे अनागत ग्रह कहा जाता है.

जाति

चतुरस्रस्तिसमिपस्तालं खंखाभिधेतथा (?)।[*]

चतुर्विधो भवेत्तालस्तत्स्वरूपं निरूप्यते ॥

तत्र चचत्पुटः प्रोक्तश्चतुरस्रो मनीषिभिः।

तथा चाचुपुटस्तिस्रस्तथा भेदा भवन्ति च॥

गुरुत्रयं समारभ्य द्विगुणं द्विगुणं क्रमात्।

एवं पूर्वव्यतीते तु खं(?) षड्डिधकल्पना ॥[17]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में जाति का छठा स्थान है सामान्य बोलचाल की भाषा में जाति, वर्ग या प्रकार का संकेत देती है. ताल को भी मात्रा की संख्या व सम और विषम दोनों के मिश्रण के अनुसार जातियों में वर्गीकृत किया गया है. नारद द्वारा संगीत मकरंद में खंड जाति का भी वर्णन प्राप्त होता है, जिसमें कई विभाजन होते है, जिसमें बड़ी समय इकाइयों, यानी गुरु और प्लुत की जगह कई लघु होते है. नारद के अनुसार चार जातियां है.

।3।6।12।24।48।96

16 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),45, 76-77

17 M. Vijay Lakshmi, A critical study of Sangita Makaranda of Narad (New Delhi: Gyan publishing house,1996), 252

* "चतुरस्रस्तिसमिपस्तालं खंडाभिधेतथा" इति शुद्धः पाठः स्यात् (दृष्टव्य नारद कृत संगीत मकरंद पृष्ठ 45)

गुरु त्रयं समारभ्य द्विगुणं द्विगुणं क्रमात् [18]

त्रयश्र : इसमें विषम मात्राएं होती है, कलाओं की संख्या (काल= दो मात्रा) त्रयश्र जाति ताल के मूल में तीन कलाएँ है और प्रारंभिक अवस्था और प्रत्येक आगे की संख्या को दो से गुणा करके छियानबे गुरुओं तक विस्तारित किया जा सकता है.

4।8।16।32।64।128।

गुरु द्वयं समारम्य द्विगुणं द्विगुणं क्रमात [19]

चतुरश्र जाति: जैसा कि नाम से पता चलता है, इस जाति में सम संख्याबद्ध मात्राओं के जोड़े है, यानी, चार कला या गुरु (आठ मात्रा). इसे इसी तरह 128 गुरुओं तक बढ़ाया जा सकता है.

मिश्र जाति: जब विषम और सम संख्या वाले तालों को विभिन्न तरीकों से संयोजित किया जाता है, तो इससे मिश्र जाति की ताल का निर्माण होता है.

तदालैश्चतुरस्र जातीनां खण्डाः विभागा भविष्यन्ति

तत्र तदा खण्डार्था ताला इति ख्याता जायन्ते। [20]

खंड जाति: जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है कि खंड जाति ताल कई विभाजनों से मिलकर बनती है, और कई लघु से युक्त ताल को खंड जाति कहा जाता है. खंड जाति छोटे विभाजन के लिये उपयुक्त मानी जाती है. यहाँ लघु या एकल मात्रा खंड जाति ताल का प्रतिनिधित्व करती है. नारद द्वारा दी गई खंड जाति ताल की परिभाषा इस प्रकार है जिसमें **'तदा लैं:, लै**:का प्रयोग लघु के लिए किया गया है.

कला

कालान्तरालवृत्तिर्याम्लकविल्व''''वत्।

कथितो नारदेनैव काललक्षणवेदिना ॥

धत्ते मध्याधंकालस्य मध्यकालखभावतः।

विलम्बो दीर्घकालस्य त्रिकालस्त्विति निश्चितः ॥[21]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में कला का सातवाँ स्थान है. नारद के अनुसार काल का अंतराल व्रत्ति है, जिसे आम्लक-बिल्व पत्र के समान माना जाता है. यह दो मात्राओं या लघु से युक्त गुरु के बराबर होता है. लेकिन यह अपने इकाई और गिनती के मामले में लगातार स्थिर नहीं है. मार्ग के अनुसार, यह अपनी मात्राओं की गिनती बदलता है. दक्षिणा, वर्तिका और चित्रा मार्ग में क्रमश: आठ, चार, दो मात्राएँ होती है.

लय

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में लय का आठवाँ स्थान है. जिस प्रकार से शरीर में नाड़ी का स्थान सर्वोपरि है उसी प्रकार से संगीत में लय का स्थान सर्वोपरि है. लय ताल की चाल या गति को कहा जाता

18 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),47,81

19 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),47,82

20 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),46.

21 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),46,84-85

है. लय दो मात्राओं के बीच का अंतराल लयबद्ध चक्र की गति का संचालन कारक कहलाता है. लय के तीन प्रकार है, साधारण भाषा या क्रिया में प्रयुक्त होने वाली प्राकृतिक सामान्य गति मध्य लय है, अर्थात न तेज और न ही धीमी यह मध्य लय की तुलना में मध्यम व धीमा है. मध्य लय का अधिक विशिष्ट आधा होना बिलम्बित लय है. द्रुत लय मध्य लय का दोहरा (तेज गति) है. इस प्रकार तीन लय है- द्रुत (तेज), मध्य (मध्यम) और विलम्बित (धीमी)

यति

अयनार्धे यतिःसम्यकीर्तितो भरतादिभिः।
एतन्मतं ममैवेति नारदो मुनिरब्रवीत् ॥
*समश्रोतोवहयतिर्गोपुच्छा चेति सा त्रिधा (?)।**
एकथोर्वलयो यस्य धृती सा स्यात्समाभिधा ॥
द्रुतादयः क्रमाद्यत्र यतिः स्रोतोवहा मता।
गोपुच्छा इति विज्ञेया द्रुतादीनां विपर्ययात् ॥[22]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में यति का नवाँ स्थान है. यति के विषय में नारद के मतानुसार अयनार्ध (आधा वर्ष) को यति माना जाता है (विद्यानाथ 2014,45) उपर्युक्त तीन लय के विभिन्न संयोजनों को यति नाम दिया गया है.

समा यति: जब ताल में बिना किसी बदलाव के प्रारम्भ से अंत तक एक ही लय पूरे ताल में रखी जाती है तथा जो एक वलय के समान लय को धारण करती है, जो पूर्ण रूप से द्रुत लय हो, मध्य लय हो या विलंबित लय हो तो इसे समायति कहा जाता है.

श्रोतोवाह यति: लय का तेज से धीमी गति में व्यवस्थित परिवर्तन श्रोतोवाह यति कहलाता है. जैस प्रारम्भ में विलम्बित-मध्य-द्रुत लय इसी प्रकार से प्रारम्भ में विलम्बित लय से और अंत द्रुत लय से किया जाये इसे श्रोतोवाह यति कहा जाता है.

गोपुच्छा यति: श्रोतोवाह यति के बिल्कुल विपरीत लय की विविधता धीमी गति से तेजी गति में बदलने से उत्पन्न हुई गति गोपुच्छा यति कहलाती है, नारद द्वारा 'संगीता मकरंद' में इसको परिभाषित करते हुए कहा गया है की जब द्रुत आदि को अपने-अपने क्रम में बदल दिया जाता है, अर्थात प्रारम्भ के वर्ण द्रुत लय में मध्य में मध्य लय और अंत में विलंबित लय हो तो उसे गोपुच्छा यति कहा जाता है.

प्रस्तार

अन्येऽपि सन्ति भूयिष्ठास्तालास्ते लक्ष्यवर्त्मनः।
प्रसिद्धविधिरत्रैव शास्त्रेऽस्मिन्प्रतिपादितः॥
तथेति तक्रयार्थं तु (?) लघूपाया भवन्त्यमी।*

---

22 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: oriental Institute,1920),46, 87-88

*"समा स्त्रोतोवहा यतिर्गोपुच्छा"इति शुद्ध: पाठ: स्यात् (दृष्टव्य नारद कृत संगीत मकरंद पृष्ठ 46)

*"तभ्देदप्रत्ययार्थं तु लघू"इति पाठ: संगीतरत्नाकर पाठ: (दृष्टव्य नारद कृत संगीत मकरंद पृष्ठ 47)

प्रस्तारसङ्ख्या नष्टं चोद्दिष्टं पातालकस्तथा ॥
द्रुतमें रुघुमें रुर्गुरुमें रुःप्लुतस्य च।
में रुः संयोगमें रुश्च खण्डप्रस्तारकं तथा ॥
प्राचां चतुर्णा में रूणां नष्टोद्दिष्टं पृथक पृथक्।
एकोनविंशतिरिति प्रेतिस्थानं ब्रुवेऽधुना ॥[23]

नारद कृत संगीत मकरंद के अनुसार ताल के दश प्राण में प्रस्तार का दसवाँ स्थान है. नारद प्रस्तार के महत्व की व्याख्या करते हुए कहते है कि अभ्यास में अनगिनत ताल है, जिनका वर्णन इस काम में नहीं किया गया है. इसलिए उन्हें समझने के लिए उन्नीस आसान विधियों का नाम दिया गया है, प्रस्तार उन तरीकों में से एक है, जो नए तालों को समझने और प्राप्त करने में बहुत मददगार होंगी. प्रस्तार का अर्थ है विस्तार, यह प्राय: एक समीकरण या सरलीकरण की तरह है. इसमें कई विशिष्ट चरण होते है जिन्हें बड़ी इकाइयों को सबसे छोटी इकाई-द्रुत द्वारा प्रतिस्थापित करने के लिए किया जाता है. प्रस्तार समाप्त होता है जब एक ताल की सभी इकाइयों को कई द्रुतों में बदल दिया जाता है. लेकिन महत्वपूर्ण कारक एक प्रस्तार करते समय चरणों की संख्या और विशिष्ट नियमों का पालन किया जाता है. एक गुरु को चार द्रुत में नहीं बदला जा सकता है, जो कि द्रुत में इसका मूल्य तीन चरणों में है. यह नीचे दिए गए समीकरण अनुसार किया जाता है.

पहला चरण	ऽ
दूसरा चरण	॥
तीसरा चरण	००।
चौथा चरण	०।०
पाँचवां चरण	।००
छठा चरण	०००० [24]

इसी तरह एक प्लुत को द्रुत द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने के लिए उन्नीस चरणों से गुजरना पड़ता है. द्रुत के बाद प्रस्तार समाप्त होता है. इस प्रकार नारद कृत "संगीत मकरंद" में ताल के दश प्राण विषय का विस्तृत रूप से वर्णन प्राप्त होता है.

निष्कर्ष- शोधपत्र के माध्यम से नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित ताल के दश प्राण के विषय में उपलब्ध सामाग्री को उजागर करने का प्रयास किया गया है. संगीत मकरंद के नृत्याध्याय के तृतीय पाद में ताल के दश प्राण और एकोत्तरशत ताल का समावेश ताल और नृत्य के बीच के संबंध को दर्शाता है. ताल के दश प्राण का वर्णन विभिन्न विद्वानो द्वारा कई ग्रन्थों में किया गया है, जिसका मूल स्त्रोत नारद कृत संगीत मकरंद ही है. संगीत मकरंद ग्रंथ में समान नाम वाले दश विधताल प्रबंधों का उल्लेख, बृहददेशी व मध्य काल के संगीत ग्रंथ 'संगीत रत्नाकर' व अन्य ग्रन्थों में भी किया गया है. ताल के दस प्राणों में काल, मार्ग, क्रिया अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का

23 Narad, sangeet Makaranda, (Baroda: Oriental Institute,1920),47, 89-92.

24. M. Vijay Lakshmi, A critical study of Sangita Makaranda of Narad (New Delhi: Gyan publishing house,1996), 255.

विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है. नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित ताल के दश प्राण से जुड़े प्रत्येक तथ्यो का आधार मानते हुये इस विषय पर कार्य किया गया है. संगीत मकरंद नारद द्वारा रचित संगीत का सम्पूर्ण ग्रंथ आध्यात्मिक रूप से शिव शक्ति को समर्पित है, जिसमें गान, ताल, दश ताल प्रबंध ,ताल के दश प्राण, वाद्यों का वर्णन, नृत्य और नाट्य का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है.

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अथर्ववेद, दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली
2. *प्रश्नोपनिषद्,* गीता प्रेस गोरखपुर, प्रथम संस्करण, *1992.*
3. शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल. *आचर्यभरत नाट्यशास्त्र*, उत्तर प्रदेश, चौखंभा संस्कृत ग्रंथालय,*1978.*
4. नारद विरचित: *संगीत मकरंद*, बड़ौदा,ओरिएंटल इंस्टीट्यूट,*1920.*
5. गर्ग, लक्ष्मी नारायण. *नारद कृत संगीत मकरंद*, हाथरस: संगीत कार्यालय,*1978.*
6. सिंह, विद्या नाथ. *ताल प्रस्तार*, नई दिल्ली, बी०आर० रिदम, *2014.*
7. पाण्डेय, सुधांशु. *ताल रत्नाकर*, लखनऊ, संस्कृति दर्पण,*2014.*
8. पाण्डेय, सुधांशु, *ताल प्राण*, लखनऊ, संस्कृति दर्पण,*2013.*
9. जौहरी, रेनू. *ग्रंथ सारामृत*, नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, *2019.*
10. Lakshmi, M. Vijay. *A critical study of Sangita Makaranda of Narad,* New Delhi, Gyan Publishing House,*1996.*